भजन

ये प्रथम भोम का नजारा,जो रुह का मूल मिलावा,रंग कंचन सिंहासन का, आसन मेरे धाम धनी का संग सोहे ठकुराणी, श्री श्यामा महारानी हम रुहों के सुभान, पिया जी मेहरबान

1) सर्वरस सागर हैं भरे नैना नूर जमाल के,इन नैनों के अमीरस ने बदले रुह के हाल ये
नूरी चरण है नरम तली, तेज भरा नख जोत का ,गौर वर्ण से चमक उठा, आलम वो दस भोम का
ऐसी नूरी झलकार, रुह करके दीदार, होती जाय कुरबान
पिया जी मेहरबान .....

2) साड़ी सेंदुरिया रंग में, सोहे जी श्यामा जी के अंग में,सुपेत जामा श्री राज का, और इजार है केसरिया
नीलो पीलो पटका कमर सजे, सेंदुरिया रंग चीरा फबे, भूषण हर अंग नये–नये, मोमिन देख फना हुए
आसमानी है पिछोरी रुह के नैनों से देखवो री, जो भी होय वतनियां
पिया जी मेहरबान.....

3) सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठे अर्श वजूद में ,खासल खास नजीक है, रुह अपने महबूब के
जाके पकड़े हाथ धनी, मेहर करके अति धनी ,ब्रह्मसृष्टि सिरताज हैं, कायम अटल सुहाग हैं
लागी रुहों को लगन, करुं हक सो मिलन, होके सुहागनिया
पिया जी मेहरबां.....